श्री नारायणी पीदम की 32वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के संबोधन का प्रारूप

दिनांक : 8 मई 2024, बुधवार	समय : 11:00 AM	स्थान : वेल्लोर, तमिलनाडू

सभी उपस्थित महानुभावों को नमस्कार!

श्री नारायणी पीठ की 32वीं वर्षगांठ पर आयोजित इस आध्यात्मिक महोत्सव में भाग लेकर मुझे आत्मिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इस पावन एवं दिव्य आयोजन के लिए मैं 'ओम शक्ति नारायणी सिद्दार पीठ चेरिटेबल ट्रस्ट' के सभी सदस्यों की सराहना करता हूँ।

जैसा कि आप सभी जानते हैं श्री नारायणी पीठ तमिलनाडु का एक ऐसा आध्यात्मिक संस्थान है, जो जाति, धर्म, पंथ और संप्रदायों के भेदभावों से दूर रहते हुए विद्यार्थियों, दलितों एवं वंचितों के उत्थान और सेवा के लिए पिछले एक दशक से निरन्तर सक्रिय है। संस्थान द्वारा पवित्र उद्देश्य के साथ मानवता के कल्याण की दिशा में किये जा रहे विभिन्न सामाजिक और कल्याणकारी कार्य अत्यंत सराहनीय हैं।

आज के इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित जनसमूह को देखकर मुझे अपने देशवासियों की आध्यात्मिक चेतना पर गर्व का अनुभव हो रहा है। मुझे यह कहते हुए खुशी है कि भारत-भूमि लोकतंत्र के साथ-साथ अध्यात्म-बोध की भी जननी है। यहां विभिन्न मतों के अनुयायी एक-दूसरे की भावनाओं का आदर और सम्मान करते हुए पारस्परिक सौहार्द का ऐसा वातावरण निर्मित कर रहे हैं, जो विश्व शांति को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। वैश्विक एकता की यह आध्यात्मिक भावना, समस्त विश्व-समुदाय को एक ही परिवार मानने के मूलमंत्र 'वसुधैव कुटुंबकम्' में निहित है।

श्री शक्ति अम्मा द्वारा दक्षिण भारत में स्थापित श्री नारायणी पीठ मानवता को समर्पित एक ऐसा आध्यात्मिक केंद्र है, जो भक्ति और निःस्वार्थ सेवा पर जोर देते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और विश्वव्यापी सामुदायिक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है।

श्री नारायणी पीठ का मिशन मानवता को आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर कर जरूरतमंद लोगों के जीवन का उत्थान करना है। एक प्रतिष्ठित आध्यात्मिक व्यक्तित्व के रूप में श्री अम्मा दुनिया में प्रेम और ज्ञान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लोगों की सेवा, आंतरिक शांति और सद्भाव का मार्ग दिखा रहे हैं।

श्री नारायणी पीठ द्वारा गरीबों और पिछड़ों की पीड़ा को दूर करने तथा ईश्वर के साथ संबंध स्थापित करने के दृष्टिकोण से आत्मा की आध्यात्मिक उन्नति हेतु भीतर की भावना को जागृत करने का कार्य किया जा रहा है, वह निश्चय ही सराहनीय एवं अनुकरणीय है।

देवियो और सज्जनो,

दक्षिण भारत की कैलाश गिरि पहाड़ियों की तलहटी में श्री नारायणी पीठ द्वारा 2007 में स्थापित श्रीपुरम स्वर्ण मन्दिर सभी धर्मों के लोगों के लिए एक आध्यात्मिक उद्यान है।

जन-आस्था का यह आध्यात्मिक केन्द्र प्रत्येक दर्शनार्थी को उसके जन्म के उद्देश्य का एहसास कराने के साथ ही उन्हें दिव्यता और आंतरिक शांति के सकारात्मक स्पंदनों का अनुभव करवा रहा है। प्रतिदिन हजारों की संख्या में लोगों का यहां आना इसकी गरिमामयी महिमा का द्योतक है।

वास्तुकला की पारम्परिक वैदिक प्रणाली पर निर्मित श्रीपुरम स्वर्ण मन्दिर भव्यता और दिव्यता के साथ-साथ अपने प्राकृतिक वातावरण के कारण सभी के आकर्षण का केन्द्र है। मनोरम मंदिर परिसर में नाना प्रकार के पेड़-पौधे और परिन्दे, पानी के तालाब और तारे के आकार का मार्ग लोगों को शांति और सुकून का अनुभव कराते हैं।

सरस सुन्दरता से ओतप्रोत यहां का प्राकृतिक एवं पवित्र वातावरण आगंतुकों को अपनी आत्मा से जुड़ने और आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करता है।

देवियो और सज्जनो,

श्री नारायणी पीठ एक ऐसा आध्यात्मिक संस्थान है, जिसके द्वारा अपनी कल्याणकारी सामाजिक गतिविधियों से जन-जन को लाभान्वित किया जा रहा है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि 8 मई 1992 को श्री शक्ति अम्मा को नारायणी के अवतार के रूप में घोषित किया गया है तभी से 8 मई को श्री नारायणी पीठ वर्षगांठ के रूप में मनाया जा रहा है।

देवियो और सज्जनो,

हिंदू धर्म में मान्यता है कि जब दुनिया में अच्छाई और बुराई के बीच संतुलन बिगड़ जाता है तो देवता मानव के रूप में अवतार लेते हैं। पृथ्वी पर ईश्वर के अवतरण का उद्देश्य मानव जाति का मार्गदर्शन कर उसके दुखों को दूर करना और दुनिया में धर्म की स्थापना करना रहा है।

पिछले युगों में अनेक अवतार देखे गये हैं। सत्य युग में 'नरसिम्हा अवतार', त्रेता युग में 'राम अवतार' और द्वापर युग में 'कृष्ण'। अपने पावन और जन-कल्याणकारी कार्यों से श्री शक्ति अम्मा को देवी नारायणी - स्त्री ऊर्जा के अवतार रूप में माना जाता है।

स्त्री ऊर्जा के उच्च स्वरूप का प्रतिनिधित्व करने वाली देवी नारायणी को सम्पूर्ण ब्रह्मांड को जन्म देने वाली मातृदेवी के रूप में पहचाना जाता है। देवी नारायणी साहस, बुद्धि और समृद्धि (कल्याण) सहित अनेक गुणों का प्रतीक हैं।

आधुनिक युग में इन तीनों ही गुणों की सबसे अधिक आवश्यकता है। साहस, बुद्धि और समृद्धि के रूप में देवी नारायणी में दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी का त्रिमूर्ति रूप सन्निहित है। इसमें दुर्गा आंतरिक शक्ति, वीरता और साहस की देवी हैं तो सरस्वती शिक्षा, कला, संस्कृति और संगीत के माध्यम से ज्ञान की देवी हैं। लक्ष्मी समग्र समृद्धि की देवी हैं, जिसमें सभी प्रकार की खुशहाली समाहित है।

कहना न होगा कि भारतीय संस्कृति अग्रणी एवं समृद्ध संस्कृति है, जो विश्व की रक्षा तथा सम्पूर्ण मानवता के कल्याण करने के उद्देश्य से प्रेरित है। अध्यात्म पर आधारित हमारी संस्कृति ने विश्व-बंधुत्व की भावना को केंद्र में रखते हुए दुनियाभर में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

हमारी परंपरा में सत्य तक पहुंचने के सभी मार्गों का सम्मान किया जाता है। **'सर्वत्र समदर्शन:'** अर्थात सब को समभाव से देखने वाला व्यक्ति ही श्री अम्मा के समान योगी माना जाता है। समत्व का यह भाव ही हमारी आध्यात्मिक परम्परा को पोषित करता है।

देवियो और सज्जनो,

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। उसके द्वारा वर्तमान में किया गया सत्कर्म ही उसके सुखद भविष्य का स्वरूप निर्धारित करता है। हमारी सकारात्मक सोच ही हमारी नियति को निर्मित करती है।

अपनी नियति का निर्माण करने के लिए हमें अपने मनो-मस्तिष्क पर नियंत्रण रखना होगा और इसके लिए ध्यान-साधना के सहारे अपने अन्तःकरण में प्रवेश कर स्वयं को गहराई से समझना होगा। ध्यान-साधना के द्‍वारा स्वयं को बदलना संभव हो पाता है।

हमें चाहिए कि हम पहले अपने-आप में बदलाव लाएं और उसके बाद ही दूसरे लोगों में परिवर्तन लाने का प्रयास करें। पारस्परिक सम्बन्धों की दृष्टि से देखा जाये तो प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। यदि सभी लोग अपने-अपने सुधार को सुनिश्चित करने के लिए परहित में कार्य करें तो एक दिन ऐसा आएगा जब हम सब मिलकर पूरी मानवता को सही दिशा में ले जा सकेंगे।

देवियो और सज्जनो,

हमारी भारत-भूमि को कर्म-भूमि के साथ-साथ पुण्य-भूमि भी माना गया है। परोपकार को सर्वाधिक पुण्य का कार्य माना गया है। कहा गया है कि नर की सेवा ही नारायण की सेवा है।

‘सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया:’ में सर्वमंगल-कामना हमारी प्रार्थनाओं का अभिन्न अंग हैं। अहिंसा और करुणा हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के आधारभूत सिद्धान्त हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि इस आध्यात्मिक आयोजन के सभी सहभागी जीवन में आगे बढ़ने के लिए अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से मूल्यों और आदर्शों के प्रति निष्ठा का निर्वहन करेंगे।

धर्म की आधारशिला पर ही पूरी मानवता टिकी हुई है। मानववाद का मुख्य संदेश राग और द्वेष से मुक्त होकर मैत्री, करुणा और अहिंसा की भावना से व्यक्ति और समाज का विकास करना रहा है। नैतिकता पर आधारित व्यक्तिगत आचरण तथा समाज-व्यवस्था ही मानववाद का व्यावहारिक रूप है। भारतीय परम्परा के अनुसार जिस समाज में धर्म की रक्षा की जाती है, वह समाज ही धर्म का संरक्षण प्राप्त करता है तभी जो कहा गया है - धर्मो रक्षति रक्षित:।

हमारी परंपरा में आध्यात्मिकता और नैतिकता को दैनिक जीवन का आधार माना गया है। हमारे पूर्वजों की अपेक्षा रही है कि समाज के सभी वर्गों के लोग अपना-अपना काम नैतिकता के आदर्शों और आध्यात्मिक लक्ष्यों के अनुरूप करें। हमारे पूर्वजों के शुभ-चिन्तन के अनुसार नैतिकता के आदर्शों के आधार पर आधुनिक विकास की दिशा में बढ़ने वाला व्यक्ति ही सफल और सुखी रहेगा। हमारे नीति शास्त्रों और आध्यात्मिक परम्पराओं के अनुरूप आचरण करने वाले व्यक्ति के लिए बाहर की सफलता और भीतर की शांति दोनों को एक साथ प्राप्त करना संभव है।

देवियो और सज्जनो,

भारत की संस्कृति सौहार्द की संस्कृति है। यहां की सभी आध्यात्मिक विभूतियों ने सदैव ही मानवता के उत्थान के बारे में चिंतन किया है। हमने विश्व को बताया कि अपने और पराए का भेद करना संकुचित मानसिकता का प्रतीक है।

उदारतापूर्ण जीवन जीने वाले लोगों के लिए पूरी पृथ्वी एक ही परिवार है। भारत के कण-कण में सत्य, अहिंसा, तप और व्रत का वास रहा है। हमारे यहां सदा ही आत्म-शांति और मानव कल्याण की कामना की जाती है। श्री शक्ति अम्मा के जीवन का प्रत्येक क्षण, प्रत्येक पल, मानवता और मानव जाति के कल्याण के लिए तत्पर है, जो वन्दनीय एवं स्तुत्य है।

आप सभी इस बात से सहमत होंगे कि हम अपनी आध्यात्मिक सम्पदा को धीरे-धीरे भूलते जा रहे हैं। आज अधिकांश लोग भौतिक सुख के लिए लालायित रहते हैं। वे धन-सम्पत्ति अर्जित करने के लिए एक ऐसी दौड़ में शामिल हैं, जिसका अंत सुकून के अभाव में सुखद हो नहीं सकता। मेरे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि धनोपार्जन नहीं करना चाहिए। अवश्य करना चाहिए, लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि धनोपार्जन के साथ मानसिक शांति, सम्भाव, संयम और सदाचार भी अत्यंत आवश्यक हैं।

देवियो और सज्जनो,

गत दिनों अयोध्या में प्रभु श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा हुई है। भारत सरकार भी अपनी जन-कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से 'राम-राज्य' के संकल्प को साकार करने की दिशा में प्रयासरत है।

गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में :

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

अर्थात रामराज्य में दैहिक, दैविक अथवा भौतिक कष्ट से सभी लोग मुक्त थे। सभी लोग एक-दूसरे से प्रेम करते थे। सब नागरिक अपने-अपने धर्म का पालन करते थे तथा नैतिकतापूर्ण जीवनयापन करते थे।

श्री नारायणी पीठ द्वारा मानवता के उत्थान की दिशा में किये जा रहे कल्याणकारी कार्यों की जितनी भी सराहना की जाए वह कम है। श्री अम्मा के सान्निध्य में संस्थान के सभी समर्पित सहयोगी आध्यात्मिक विकास और मानवीय सौहार्द के आदर्शों को विस्तार प्रदान कर रहे हैं। मैं इस विशिष्ट आयोजन की सफलता की मंगल-कामना करता हूँ और भारत-भूमि सहित, समस्त विश्व के कल्याण हेतु प्रार्थना करता हूँ।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि देश के समस्त नागरिक अपने खुशहाल जीवन के लिए सभी प्रकार की समस्याओं से मुक्त हों तथा नैतिकता, प्रेम और सौहार्द के साथ जीवन में आगे बढ़ें।

अंत में आपके आतिथ्य के लिए संस्थान के सभी पदाधिकारियों के धन्यवाद एवं आभार के साथ अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

धन्यवाद!

जय हिन्द!